अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

समाज, संस्कृति और धर्म की रक्षा हेतु एक संकल्प

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

समाज, संस्कृति और धर्म की रक्षा हेतु एक संकल्प

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज भारतीय क्षत्रिय परंपराओं का एक गौरवशाली अंग है, जिसने सदियों से सनातन धर्म, हिंदू संस्कृति और अपने सामाजिक मूल्यों को संरक्षित रखा है। यह समाज केवल युद्ध और शासन तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि सनातनी परंपराओं, धार्मिक अनुष्ठानों और हिंदू मंदिरों के निर्माण में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कार्यरत है। यह संगठन देशभर में फैले 15 लाख से अधिक पंवार (पोवार) बंधुओं को एक मंच पर लाकर, समाज की अस्मिता, पोवारी भाषा, परंपराओं और धार्मिक मूल्यों की रक्षा के लिए सक्रिय है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज का सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति में योगदान

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज भारतीय क्षत्रिय परंपराओं का एक गौरवशाली अंग है, जिसने सदियों से सनातन धर्म, हिंदू संस्कृति और अपने सामाजिक मूल्यों को संरक्षित रखा है। यह समाज केवल युद्ध और शासन तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि सनातनी परंपराओं, धार्मिक अनुष्ठानों और हिंदू मंदिरों के निर्माण में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कार्यरत है। यह संगठन देशभर में फैले 15 लाख से अधिक पंवार (पोवार) बंधुओं को एक मंच पर लाकर, समाज

की अस्मिता, पोवारी भाषा, परंपराओं और धार्मिक मूल्यों की रक्षा के लिए सक्रिय है।

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज की पहचान सनातनी मूल्यों और हिंदू परंपराओं के प्रति निष्ठा से हुई है। इस समाज ने सदैव धर्म रक्षा के लिए संघर्ष किया और वैदिक रीति-रिवाजों, मंदिर निर्माण, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और धार्मिक अनुष्ठानों को संरक्षित रखा।

१. हिंदू मंदिरों का निर्माण और संरक्षण

पंवार (पोवार) शासकों और समाज के धर्मपरायण लोगों ने अनेक भव्य हिंदू मंदिरों का निर्माण करवाया। ये मंदिर केवल पूजा स्थल ही नहीं थे, बल्कि हिंदू धर्म की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत के प्रतीक भी बने। समाज के कई राजाओं ने शिव, विष्णु, देवी और अन्य सनातनी देवताओं के मंदिरों का निर्माण करवाया।

२. गुरुकुल और वैदिक शिक्षा का समर्थन

पंवार (पोवार) समाज ने गुरुकुल प्रणाली को संरक्षण दिया, जहाँ संस्कृत, वेद, उपनिषद और धर्मशास्त्रों का अध्ययन कराया जाता था। समाज के कई संत और विद्वान इसी परंपरा से निकले, जिन्होंने सनातन धर्म को मजबूती प्रदान की।

३. वैदिक अनुष्ठान और सामाजिक परंपराएँ

समाज ने सदियों से यज्ञ, पूजा-पाठ, कर्मकांड और धार्मिक संस्कारों को जीवंत रखा। जन्म से मृत्यु तक के हर संस्कार को शास्त्रों के अनुसार करने की परंपरा आज भी समाज में देखने को मिलती है।

पोवारी संस्कृति – समाज की पहचान और गौरव

१. पोवारी भाषा का संरक्षण और प्रचार

पोवारी भाषा पंवार (पोवार) समाज की पहचान रही है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों की वाहक है। महासंघ पोवारी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्यिक ग्रंथों, डिजिटल संसाधनों और शैक्षिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दे रहा है।

२. पोवारी लोसंस्कृति और परंपराओं का पुनर्जागरण

महासंघ ने पोवारी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए लोकगीत, पारंपरिक नृत्य, त्योहारों और सामाजिक परंपराओं को बढ़ावा देना शुरू किया है। इससे युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ी रह सकेगी।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

३. पोवारी रीति-रिवाज और पारंपरिक विवाह पद्धति

पंवार (पोवार) समाज की विवाह परंपरा विशिष्ट रही है, जिसमें वैदिक मंत्रों, संस्कारों और पारंपरिक रीति-रिवाजों का विशेष स्थान है। महासंघ इस परंपरा को बनाए रखने के लिए प्रयासरत है।

******

पँवार धर्मोपदेश और समाज की वैचारिक धारा

१. स्वर्गीय श्री लख्याराम जी तुरकर द्वारा रचित "पँवार धर्मोपदेश"

महासंघ ने अपने वैचारिक दृष्टिकोण में स्वर्गीय श्री लख्याराम जी तुरकर द्वारा लिखित "पँवार धर्मोपदेश" को एक मार्गदर्शक ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया है। यह ग्रंथ समाज को नीति, धर्म, आचार-विचार और सामाजिक मर्यादाओं की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

२. "पँवार धर्मोपदेश" के प्रमुख सिद्धांत

- धर्म, सत्य और न्याय की रक्षा
- समाज में संगठन और एकता बनाए रखना

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ

- सनातनी परंपराओं और हिंदू संस्कृति का संरक्षण
- युवाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास

पंवार जाति सुधारनी सभा और महासंघ की भूमिका

पंवार जाति सुधारनी सभा समाज का सबसे पुरातन संगठन है, जो शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक उत्थान के लिए कार्यरत रहा है। महासंघ इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए समाज को संगठित और आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रहा है।

१. महासंघ के प्रमुख कार्य और लक्ष्य

शिक्षा और रोजगार: समाज के युवाओं के लिए शिक्षा सहायता, छात्रवृत्तियाँ और कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करना।

२. धार्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता

सनातन धर्म और हिंदू परंपराओं को पुनर्स्थापित करना।

३. युवा नेतृत्व विकास

युवाओं और महिलाओं को समाज में नेतृत्व प्रदान करने के लिए मार्गदर्शन देना।

४. सामाजिक एकता

भारत में 15 लाख से अधिक पंवार (पोवार) बंधुओं को संगठित करना।

******

महासंघ से जुड़ने का महत्व

- अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए।
- सनातन धर्म और रीति-रिवाजों की रक्षा के लिए।
- युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन देने के लिए।
- सामाजिक समरसता और संगठन शक्ति बढ़ाने के लिए।

आइए, अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ से जुड़ें और अपने समाज को गौरवशाली बनाएँ।

समस्त पोवार(पंवार) समाज और अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ

****

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ